कर्म ही भाग्य का निर्माता है

जनपद सहारनपुर के नागल कस्बे की रहने वाली गुननाज जो अपनी आजीविका को बेहतर बनाने के लिए प्रयास कर रही थी , प्रयास उसका कुछ इस तरह था , गुनाज की आर्थिक हालत ठीक नहीं थी,इसलिए सिलाई सीखना शुरू किया, सिलाई सीखने के बाद वह स्वरोजगार करना चाहती थी , सिलाई मशीन और उससे सम्बंधित साधन जुटाने के लिए पैसे की जरूरत थी जिस कारण उसे साहूकार से कर्ज लेना पड़ा। वह अपनी आजीविका तो बढ़ाना चाहती थी , परन्तु ऐसा कोई रास्ता नजर नहीं आ रहा था। जनहित कार्यकर्ताओं ने गुन्नाज को अपनी आजीविका बढ़ाने हेतु समूह से जुड़कर वहीं से आसानी से लोन लेने का रास्ता बताया। उसने समूह से मात्र पाँच हजार रूपये , सिलाई का काम करने के लिए लिया|

गुनाज ने पाँच हजार रूपये से सिलाई का काम शुरू कर दिया। अब उसे घर पर ही रोजगार मिल गया । उसने सिलाई के इस व्यापार से एक माह में ही (चार हजार रूपये की बचत हुई। बचत का सिलसिला जारी हैं । उसने इस आमदनी से साहूकार का कर्ज भी चुका दिया तथा उसने अपने चचेरे बहन को भी इस काम में लगा दिया है।

शिवालिक बैंक से समूह की स्वीकृति से लोन लेकर अपने कारोबार को बढ़ाया हैं । और समाज में यह संदेश दिया हैं कि इंसान चाहे तो कर्म करके हर मुसीबत को कम कर सकता हैं।